उपदेशप्रासाद भाग-४

फोल्डर नं.	००२६०५
ग्रन्थ	उपदेश प्रासाद भाग-४
लेखक	विजयलक्ष्मीसूरिजी
प्रकाशक	सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला – अहमदाबाद
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	
पृष्ठ	५२०

मुख्य टाईटल
આચાર્ય શ્રી સુરેન્દ્રસૂરીશ્વરજી જૈન તત્વ જ્ઞાનશાળા
૪૨ા બે મિનિટ
किञ्चित प्रास्तानिक्रम
શ્રી ઉપદેશપ્રાસાદ ગ્રંથ પ્રકાશનમાં સુકૃત સહભાગીની યાદી
प्रथमावृतिगत प्रस्तावना
अनुक्रमणिका
एकोनविंश स्तम्भ
अमूढदृष्टिनामतुर्यदर्शनाचार – लेपश्रेष्ठी वैराग्यत्रय स्वरुपं च ---------- १
अनुबुंहणाख्य पञ्चमो दर्शनाचार – कामदेवश्रावक ---------- ५
पञ्चमदर्शनाचारस्यैव स्तुति – हेमचन्द्रसूरि ---------- ७
स्थिरकरणाह्व षष्ठो दर्शनाचार – कुमारपालनृप (स्त्रीचरित्रम) ---------- ११
पुनःस्थिरीकरणस्वरुपम – हेमचन्द्रसूरिबोधित कुमारपाल ---------- १४
वात्सल्यमाना सप्तमो दर्शनाचार – कुमारपालनृप पतिव्रता स्त्रीकृतं पतिवात्सल्यम ---------- २०
प्रभावकनामाष्टमो दर्शनाचार – एक कश्चित साधु ---------- २३
ईर्यासमितिनामप्रथमचारित्राचार – वरदत्तर्षि ---------- २५
भाषासमितिनामद्वितीयचारित्राचार – रक्षा साध्वी ---------- २६
एषणासमितिनामतृतीयचारित्राचार – धनशर्मा साधु ---------- २८
चतुर्थपञ्चमौ चारित्राचारौ – प्रकीर्णकदृष्टान्ता ---------- ३०
गुप्तित्रयनामकषष्ठसप्तमाष्टमचारित्राचार – जिनदासश्रेष्ठी, तापसत्रयं, एको मुनिश्च ---------- ३२
तपाआचार – क्षेमर्षि ---------- ३५
तपस्तपनहेतु, तपस प्रकारा, तत्र प्रथम प्रकार, सप्तदशधा मरणं च – धन्यमुनि ---------- ३८

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीयतृतीयो तपआचारौ – द्रढप्रहारी मुनि ---------- ४१
विंशतितम स्तम्भ
रसत्यागकायकेशाख्यौ चतुर्थपञ्चमावाचारौ – मंगुसूरि ---------- ४४
संलीनतानामा षष्ठस्तपआचार – तापस स्कन्दकमुनिश्च ---------- ४७
प्रायश्चित्तनामा सप्तमस्तपआचार आलोचनाविषयश्च – मातग्डपुत्र ---------- ४९
पञ्चाणुव्रतविषये प्रायश्चित्ततपोवर्णनम – विबुद्धसिंहसूरि ---------- ५२
गुणव्रतशिक्षाव्रतार्हप्रायश्चित्ततपोवर्णनम – धनेश्वरसूरि ---------- ५५
धर्मकार्ये दम्भत्याग कार्य – सुक्षशिवद्विज रुपीलक्ष्मणासाध्वीद्दष्टांतश्च ---------- ५८
विनयनामाष्टमस्तपआचार – पञ्चाख्यभारवाहक ---------- ६१
पुनर्विनयवर्णनम – अर्हन्नकमुनि ---------- ६४
वैयावृत्त्यनामा नवमस्तपआचार – विपुलमतिकथा ---------- ६८
स्वाध्यायनामा दशमस्तपआचार – तन्तुवाय सुभद्रा च ---------- ७१
ध्याननामैकादशस्तपाचार – वसुभूति ---------- ७४
कायोत्सर्गनामा द्वादशस्तपआचार – सुस्थितमुनि शिवमुनिश्च ---------- ७७
स एव तपआचार – सुव्रतादिमुनित्रयम ---------- ७९
तपसो मुख्यत्वम – हरिकेशी मुनि ---------- ८४
वीर्याचार – सुधर्माश्रेष्ठी ---------- ८७
एकविंश स्तम्भ
पूर्णतागुण – जयघोषद्विज ---------- ९०
मग्नतागुण – सोमवसु ---------- ९३
स्थिरतागुण – राजीमती ---------- ९५
मुनीनां स्थैर्यम – सनत्कुमारचक्री ---------- ९९
मोहत्याग – अर्हद्दत्त ---------- १०२
ज्ञानाज्ञानविषय – सालमहासालौ ---------- १०५
शमगुण – मृगापुत्र ---------- १०८
पञ्चेन्द्रियस्वरुपम – सुभद्रकथा कूर्मद्रयकथा च ---------- १०९
पञ्चेन्द्रियस्वरुपमेव – सुकुमारिका साध्वी ----------११३
ईन्द्रियजय – सुभानुकुमार ---------- ११५
ज्ञानयुक्तक्रियाया फलम – रतिसुन्दरी ऋद्धिसुन्दरी च ---------- ११६
तृप्तातृप्तस्वरुपम – बुद्धिसुन्दरी ---------- ११९
लेप्यालेप्यस्वरुपम – गुणसुन्दरी ---------- १२०
मंत्रिपदनिन्दा – शकटालमंत्री ----------१२१
निःस्पृहता – कालवैशिकमुनि ---------- १२५
द्वाविंश स्तम्भ
सम्यकत्वमुनित्वयौरैक्यम – कुरुदत्त महेभ्यपुत्र ---------- १२६

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधाऽविधा च – समुद्रपाल ---------- १२८
विवेक – श्रमणभद्र ---------- १२९
माध्यस्थ्यम – अर्हन्मित्र ----------१३१
निर्भयता – स्कन्दकाचार्य ---------- १३३
आत्मप्रशंसा – मरीचिकुमार ---------- १३४
तत्त्वदृष्टि – कश्चिदाचार्य ---------- १३६
संपद्रिनश्वरता – भूमिपालनृप ---------- १३८
कर्मवैचित्र्यम – कदम्बविप्र ---------- १४०
कर्मफलम – ढंढणर्षि ---------- १४१
चित्तैकाग्र्यम – सुकोशलमुनि ---------- १४४
लोकसंज्ञात्याग – श्वेतकृष्णप्रासादौ---------- १४५
चक्षुस्वरुपम – आर्यरक्षितसूरि ---------- १४७
मूर्च्छास्वरुपम – संयतिमुनि ---------- १५०
अनुभवप्रभाव – आभिरीवञ्चकवणिक ---------- १५१
त्रयोविंश स्तम्भ
योगत्रयम – अक्षितकुमारमुनि ---------- १५३
यज्ञस्वरुपम – रविगुप्तब्राह्मण ---------- १५५
द्रव्यपूजा भावपूजा च – धनसारवणिक ---------- १५७
दुर्ध्यानस्थानानि (६३) ---------- १६०
तपःस्वरुपम – नन्दनर्षि ---------- १६३
पुनस्तपः स्वरुपम (रोहिणीव्रतम) – रोहिणीचरितम---------- १६५
सप्तनयस्वरुपम – शुककथा ---------- १६७
मनुष्यभवदुर्लभता – पाशकदृष्टान्त (चाणाक्यकथा) ---------- १७२
औत्पत्तिकी बुद्धि – रोहककथा ---------- १७६
द्विविधमायुः स्वरुपम – प्रकीर्णकदृष्टान्ता ---------- १७९
द्वितीयाऽशरणभावना – सगरचक्रिपुत्रा ---------- १८५
संसारासारता – श्रीदत्तश्रेष्ठी---------- १८५
हुताशिनीपर्व – हेलिकाकथा ---------- १८९
चतुर्विंश स्तम्भ
श्रीयशोभद्रसूरिबलभद्रमुनिज्ञातम ---------- १९४
सुलभबोधिस्वरुपम – षट मुनय ---------- १९६
प्रत्येकबुद्धस्वरुपम – करकण्डुनृप (प्रथमप्रत्येकबुद्ध) ---------- १९९
द्वितीयप्रत्येकबुद्ध – द्विमुखनृप ---------- २०१
चतुर्थप्रत्येकबुद्ध – नग्गति ---------- २०३
केचिल्लक्षातो गृहीतव्रतं न त्यजन्ति – भवदेव ---------- २०६

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीजंबूस्वामिचरितम ---------- २०८
भावन्दनफलम – साम्बकुमार ----------२११
भव्यः प्रतिबोधं प्रान्प्रोति – श्रेणिकनृप ---------- २१५
तीर्थस्तवना, चैत्यभङ्गपापक्षयोपायश्च – सांतुमंत्री कश्चिन्मुनि प्रह्लादननृपश्च ---------- २१७
धर्मस्य माहात्म्यम – मङ्गलकुम्भ ---------- २२०
गुरुपट्टानुक्रम – सुधर्मादि ---------- २२३
तपाबिरुदप्रास्त्यनन्तरं गुरुपट्टानुक्रम ---------- २२७
श्रीहीरविजयसूरेः संबंध ---------- २२९
श्रीहीरविजयसूरेः संबंध ---------- २३३
प्रासादादिवर्णनम---------- २३५
प्रशस्ति ---------- २३७

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org